बाँदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
बाँदा - २१०००१ (उ0प्र0)
Banda University of Agriculture & Technology, Banda- 210001 (U.P.)

मौसम आधारित कृषि सलाह

(Agro-Weather Advisory Bulletin No.: 125 /2025) Year: 7th

जिला: बाँदा	जारी करने की तिथि: 01.03.2025

क्रम सं	विभाग	सलाह
1-	शाक-भाजी	➢ खड़ी फसलों में मृदा जल एवं खरपतवार प्रबंधन करें। ➢ ग्रीष्म ऋतु हेतु टमाटर, बैगन व मिर्च की रोपाई करें। ➢ प्याज व लहसुन फसलों में नमी प्रबंधन करें। ➢ भिंडी, चौलाई, कुल्फ़ाए लौकी, कद्दू, तरोई, खीरा, करेला,लोबिया की बुआई कर दें। ➢ मिर्चए टमाटर, मिर्च, लहसुन, गोभी वर्गीय सब्जियों में माहू आने की संभावना है अतः उपयुक्त कीटनाशी से पादप सुरक्षा करें। ➢ ग्रीष्म ऋतु की नव रोपित फसलों में मृदा नमी संरक्षणहेतु सूखी घास या पुआल का पलवार प्रयोग करें।
2-	शस्य-प्रबंधन एवं मृदा-प्रबंधन	***शस्य-प्रबंधन*** ➢ इस समय बढ़ते तापमान के दृष्टिगत गेहूँ की फसल में समय समय पर पानी लगाना आवश्यक है! फसल की अवस्था एवं मृदा के अनुरूप एक निशिचित अन्तराल पर पानी लगाना लाभदायक होता है। ➢ दिन के बढते तापमान के कारण होने वाले नुक्सान से बचने के लिए किसानो को पोटेशियम नाईट्रेट का १–२ प्रतिशत घोल का छिड़काव करना चाहिए। ➢ समय से बोयी गयी सरसों की फसल अब परिपक्वताके करीब है ! इसकी समय पर कटाई सुनिश्चित की जानी चाहिए । ➢ खेत खाली होने की दशा में मुंग एवं उरद की बोआई का कार्य शुरू कर दें! बोआई के समय १८ किग्रा नत्रजन व ४५ किग्रा फॉस्फोरस की मात्रा का प्रयोग प्रति हेक्टेयर की दर से करें। ➢ इसके लिए लगभग ४० किग्रा डी०ए०पि० प्रति एकड़ की दर से खेत में देना चाहिए । बीजों की बोआई अगर सीडड्रिल से की जाए तो अच्छा रहता है। ➢ इस तरह से खाद एवं बीज दोनों मिट्टी में एक साथ यथा स्थान दिया जा सकता ह।बोआई से पहले बीजों को राईजोबियम कल्चर से उपचारित करना लाभदायक रहता है। ***मृदा-प्रबंधन*** ➢ उद्यानिक फल वृक्षों में आवष्यकतानुसार सिंचाई उपरान्त पोषक तत्वों का प्रयोग करें। ➢ जो सब्जी फसलें अभी भी खेतों में है उनमें आवष्यकतानुसार पोषक तत्वों का

		प्रयोग करें। ➢ ग्रीष्मकालीन सब्जी फसलों की बुवाई/रोपाई में फास्फोरस एवं पोटाष का प्रयोग आधारीय उर्वरक के रूप में प्रयोग करें। एवं तिहाई नत्रजन का भी प्रयोग करना उपयुक्त होगा। ➢ जायद मूंग एवं अन्य फसलों की बुवाई हेतु कृषि आदानों की व्यवस्था पूर्व में करना उचित होगा।
3-	**पशुपालन प्रबंधन**	वर्तमान में जैसा की हम देख रहे हैं की मौसम में अचानक से बदलाव हो रहा है। तेज धूप के साथ तापमान में भी काफी उतार चढाव देखने को मिल रहा है। ऐसे समय में मौसम में परिवर्तन के दौरान हमे ➢ पशुओं की सही ढंग से देखभाल करनी चाहिए और उचित मात्रा में भोजन (राशन) भी देना चाहिए जिससे की पशुओं की प्रजनन क्षमता अच्छी बनी रहे और उनके स्वास्थ पर भी कोई विपरीत प्रभाव न पड़े। ➢ पशुओं की प्रजनन क्षमता प्रभावित होने के पीछे मौसम में बदलाव भी एक प्रमुख कारक है इसलिए मौसमी प्रभाव से बचाने पर पशुओं की प्रजनन क्षमता भी अच्छी बनी रहती है। ➢ पशुपालक अपनी गाय व भैंस के हीट में आने पर (गर्म होने पर) अच्छी नस्ल के सांड से ही उचित समय पर ग्याभिन कराएं साथ ही ध्यान देंवे कि गाय व भैंस के दो से तीन माह के ग्याभिन होने पर पशु चिकित्सक से गर्भ का परीक्षण अवश्य कराएं एवं ब्याने वाले पशुओं का विशेष ध्यान रखते हुए अन्य पशुओं से अलग रखें। ➢ ब्याने वाले पशुओं को दुग्ध ज्वर (प्रसूति बुखार) से बचाने के लिए खनिज मिश्रण 50–60 ग्राम अवश्य दें । ➢ हरे चारे के लिए उगाई जा रही बरसीम व जयी फसलों की सही समय पर कटाई करते रहें। ➢ पशुओं को साफ व ताजा पानी पिलाएं व पशुओं का विछावन समय – समय पर बदलते रहें एवं पशु को ठण्ड लगने की दशा में नजदीकी पशुचिकित्सक से संपर्क करें।
4–	**कीट-प्रबंधन**	➢ चना/मटर/ मसूर में फली बेधक के नियंत्रण हेतु फसल की नियमित निगरानी करते रहें 5 फेरोमोन ट्रैप प्रति हे0 की दर से खेत मे लगायें। आवश्यकतानुसार नीम गिरी 4 प्रतिशत अथवा एच0एन0पी0वी0 250 एल0इ0 250–300 मिली0 300–400 लीटर पानी मे घोलकर प्रति हे0 की दर से सायंकाल छिड़काव करके कीट का जैविक नियंत्रण करें। सेमीलूपर कीट के रासायनिक नियंत्रण हेतु क्यूनालफास 25 प्रतिशत ई0सी0 की 2 लीटर मात्रा प्रति हे0 की दर से 600–700 लीटर पानी मे घोलकर छिड़काव करना चाहिये। ➢ अरहर में फली की मक्खी कीट से प्रकोपित फलियों की दशा में एसीफेट 75 प्रतिशत एस0 पी0 1 ग्राम प्रति लीटर अथवा लैम्ब्डा साह्यलोथ्रिन 5 प्रतिशत

		ई0सी0 0.8 मिली0 प्रति लीटर अथवा फ्लोनीकॉमिड 50 डब्ल्यू जी 4 ग्राम को 10 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। ➢ सब्जियों में कीटों के नियंत्रण हेतु नीम गिरी 4 प्रतिशत (40 ग्रा0 नीम गिरी का चूर्ण 1 ली0 पानी में) का घोल बनाकर 10 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करना चाहिए। बैगन की फसल में कलंगी एवं फल बेधक कीट के नियंत्रण हेतु 10 मीटर के अन्तराल पर प्रति हेक्टेयर में 100 फेरोमोन ट्रेप लगाकर वयस्क नर कीट पकड़ कर नष्ट कर देना चाहिए व क्लोरेन्ट्रानिलीप्रोल कीटनाशी की 100 मिलीलीटर मात्रा को 250 लीटर पानी में घोल बनाकर प्रति एकड़ की दर से 10 दिन के अन्तराल पर आवश्यकतानुसार छिड़काव करना चाहिए। टमाटर में फल बेधक सूड़ी के नियंत्रण हेतु एजाडिरैक्टिन 0.15 प्रतिशत की 2.5 लीटर मात्रा को 500–600 लीटर पानी में घोलकर प्रति हे0 की दर से आवश्यकतानुसार 8–10 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करें। रस चूसने वाले कीटों के नियंत्रण हेतु थायोमेथोक्साम 25 प्रतिशत डब्लू0 जी0 3 ग्राम को 10 लीटर अथवा अथवा फ्लोनीकॉमिड 50 डब्ल्यू जी 4 ग्राम को 10 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। ➢ आम में मिली बग कीट व भुनगा कीट के नियंत्रण हेतु अथवा फ्लोनीकॉमिड 50 डब्ल्यू जी 4 ग्राम को 10 लीटर अथवा बुप्रोफेजिन 25 प्रतिशत एस0सी0 2 मिली0 प्रति लीटर पानी में घोलकर आवश्यकतानुसार 10–15 दिन के अन्तराल पर 2–3 छिड़काव करें।
5-	**पादप रोग प्रबंधन**	➢ गेहूँ और जौ के स्पाट ब्लोच या झुलसा रोग के नियंत्रण हेतु प्रोपीकोनाजोल के 1 ग्राम प्रति लीटर जलीय घोल का छिड़काव 10–15 दिनों के अन्तराल पर करें। ➢ सरसों या अन्य किसी फसल में चूर्णिल आसिता रोग के नियंत्रण हेतु सल्फेक्स 2 ग्राम प्रति लीटर की दर से रोग के लक्षण दिखाई देने के तुरन्त बाद तथा 2 छिड़काव 10 दिनों के अन्तर पर करें। ➢ सरसों और अलसी में अल्टरनेरिया पर्ण चित्ती रोग के नियंत्रण के लिए मैंकोजेब, की 2.5 ग्राम प्रति लीटर की मात्रा का छिड़काव 15 दिनों के अन्तर पर अथवा प्रोपिकोनाजोल या हेक्साकोनाजोल की 0. 5 मिलीलीटर मात्रा प्रतिलीटर पानी की दर से 15 दिनों के अन्तर पर करें। ➢ सफेद मक्खी द्वारा फैलने विषाणुओं के लिये 3 मिलीलीटर डाइमेथोऐट प्रति लीटर जल में तथा डेमिक्रान एवं नुवान की 1 मिलीलीटर मात्रा 3 लीटर जल की दर से धोल बनाकर छिड़काव करें।
6.	**बागवानी. प्रबंधन**	➢ इस माह किसान भाइयों को गर्मी से पौधों की सुरक्षा तथा सिंचाई नालियों की मरम्मत कर लेना चाहिए। ➢ इस महीने में गर्मी की बढ़ोतरी के कारण पेड़ों को डबल रिंग पद्धति से 7 से 10 दिनों के अंतराल में सिंचाईं करें। ➢ फलदार पौधों के थालों में घास फूस या भूसे का पलवार के रूप में प्रयोग करें जिससे कि वाष्पोत्सर्जन के द्वारा होने वाले पानी के झरण को रोका जा सके।

		➢ आम में भुनगा कीट से बचाव हेतु प्रोफेनोफॉस 1.5 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में घुलनशील गंधक 2.0 ग्राम अथवा डाइनोकैप 1.0 मि.ली. की दर से पानी में घोलकर छिड़काव करें। ➢ काला सड़न या आन्तरिक सड़न के नियंत्रण के लिए बोरैक्स 10 ग्राम 1 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें.।
7.	**वानिकी प्रबंधन**	➢ वानिकी पौधशाला में पुरानी पौध का स्थानांतरण सावधानी के साथ करें और मिट्टी से जुड़ी जड़ों को तेज धार वाले औजार से काटें। स्थानांतरण पष्चात पौधों की सिंचाई करें। ➢ वानिकी पौधशाला को खरपतवार और रोग मुक्त रखें। ➢ कृषि वानिकी के अंतर्गत लगाए गए पेड़ों के थालों की निराई गुड़ाई, सिंचाई और टहनियों की छटाई करें ।

वैज्ञानिक सलाहकार मंडल–

1. डॉ जी. एस. पंवार	7. डॉ दिनेश गुप्ता
2. डॉ दिनेश साह	8. डॉ पंकज कुमार ओझा
3. डॉ ए.सी. मिश्रा	9. डॉ सुभाष चंद्र सिंह
4. डॉ ए.के. श्रीवास्तव	10. डॉ जगन्नाथ पाठक
5. डॉ राकेश पाण्डेय	11. डॉ धर्मेन्द्र कुमार
6. डॉ मयंक दुबे	